वाक्य

वाक्य की परिभाषा

दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक समूह को, जिसका पूरा पूरा अर्थ निकलता है, उसे वाक्य कहते हैं।

उदाहरण -

(i)

(ii)

ऊपर लिखे गए वाक्यों में से पहले वाक्य में पहले आदमी के द्वारा पूछे गए प्रश्न का जवाब दूसरा आदमी दे रहा है परन्तु इससे अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा है कि दूसरा आदमी क्रिकेट देखने गया या क्रिकेट खेलने गया या कुछ और भी हो सकता है। दूसरे वाक्य में दूसरे आदमी के द्वारा दिए गए जवाब से वाक्य का सही-सही अर्थ स्पष्ट हो रहा है इसलिए इसे हम वाक्य कह सकते हैं।

वाक्य के अंग

वाक्य निर्माण के लिए कर्ता तथा क्रिया का होना आवश्यक है। ये दोनों ही वाक्य के अंग हैं। इनके बिना वाक्य पूरा नहीं हो सकता है।

उदाहरण -

(i) निशा गाना गाती है।

(ii) सुधा गाना सुनती है।

इन दोनों ही वाक्यों में 'निशा' तथा 'सुधा' कर्ता है, 'गाती है', 'सुनाती है' क्रिया है और 'गाना' क्रिया विशेषण है।

इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि वाक्य के दो अंग हैं :-

(क) उद्देश्य

(ख) विधेय

(क) **उद्देश्य:-** इसके अंतर्गत वाक्य का कर्ता तथा कर्ता के विशेषण आते हैं।

(ख) **विधेय:-** इसके अंतर्गत कर्म तथा कर्म विशेषण, क्रिया तथा क्रिया विशेषण आते हैं। कर्ता के विषय में कहे गए शब्द इसके अन्तर्गत आते हैं।

उदाहरण -

राधा	बाज़ार जा रही है।
उद्देश्य	विधेय

यहाँ 'राधा' (कर्ता) के विषय में कहा जा रहा है इसलिए 'राधा' उद्देश्य है, 'बाज़ार' क्रिया विशेषण है तथा 'जा रही है' क्रिया है इसलिए यह विधेय है।

इसी प्रकार -

(i)	राहुल	क्रिकेट खेल रहा है।
	उद्देश्य	विधेय

(ii)	मेरी बड़ी बहन सीता	अच्छा गाती है।
	उद्देश्य	विधेय
	यहाँ मेरी बड़ी बहन कर्ता का विशेषण है इसलिए यह भी उद्देश्य है।	
(iii)	मेरी माँ	अभी बाज़ार गई है।
	उद्देश्य	विधेय
(iii)	नरेश	अपनी कक्षा का प्रथम छात्र है।
	उद्देश्य	विधेय

• कभी कभी कर्ता तथा क्रिया के बिना भी वाक्यों की रचना की जा सकती है। परन्तु वह अपूर्ण वाक्य होता है। ऐसे वाक्यों का अर्थ उसके पहले के वाक्यों के आधार पर ही स्पष्ट हो सकता है।

उदाहरण -

पिताजी - शोभा, तुम्हारे इम्तिहान कब से शुरू हो रहे हैं।

शोभा - अगले महीने से।

इस प्रकार के वाक्यों का प्रयोग विशेष परिस्थिति में ही होता है। इस प्रकार के वाक्यों का प्रयोग कम समय के होने पर या जल्दी बोलने के लिए किया जाता है।

वाक्य के भेद

वाक्य भेद दो प्रकार से किए जा सकते हैं -

1. अर्थ के आधार पर वाक्य भेद

2. रचना के आधार पर वाक्य भेद

1. **<u>अर्थ के आधार पर वाक्य भेद</u>** - अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं -

(i) **विधान सूचक वाक्य** :- वह वाक्य जिससे किसी प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है, उन्हें विधान सूचक वाक्य कहते हैं;

जैसे –

(क) अकबर एक मुगल शासक था।

(ख) शाहजहाँ जहाँगीर का पुत्र था।

(ग) सूरज दिन में उगता है।

(घ) ये मेरी माँ है।

(ii) **नकारात्मक (निषेधात्मक) वाक्य** :- जिन वाक्यों को कथन का निषेध (नहीं) करने का बोध हो, उन्हें नकारात्मक वाक्य कहते हैं;

जैसे –

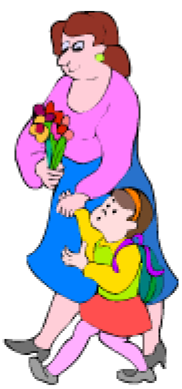

(क) मैं कल स्कूल नहीं जाऊँगा।

(ख) रमेश खाना नहीं खा रहा है।

(ग) तुम कल मेरे घर नहीं आना।

(iii) **आज्ञा सूचक वाक्य** :- वह वाक्य जिसके द्वारा किसी प्रकार की आज्ञा दी जाती है या प्रार्थना की जाती है, उन्हें आज्ञा सूचक वाक्य कहते हैं;

जैसे -

(क) कृपया मुझे अंदर आने दीजिए।

(ख) अंदर आ जाओ।

(ग) चुप हो जाओ।

(घ) कृपया चुप हो जाइए।

(iv) **प्रश्नवाचक वाक्य** :- वे वाक्य जो प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग किए जाते हैं, अर्थात् किसी भी प्रकार के प्रश्न का बोध कराने वाले वाक्यों को प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं;

जैसे -

(क) तुम घर कब आओगे?

(ख) नमन कैसा है?

(ग) वह कल स्कूल आया था या नहीं?

(घ) शोभा कहाँ जा रही है?

(v) **इच्छावाचक वाक्य** :- जिन वाक्यों में वक्ता अपने लिए अथवा किसी दूसरे के लिए इच्छा प्रकट करता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं;

जैसे -

(क) मैं आम खाना चाहता हूँ।

(ख) भगवान करे, तुम परीक्षा में ज़रुर उत्तीर्ण हो जाओ।

(ग) तुम्हारे पैसे तुम्हें वापस मिल जाए।

(vi) **संदेहवाचक वाक्य** :- जिन वाक्यों में वक्ता संदेह के भाव को प्रकट करता है, उन्हें संदेह वाचक वाक्य कहते हैं;

जैसे -

(क) हो सकता है इस साल गर्मियों की छुट्टियों में हम मसूरी जाएँ।

(ख) शायद राहुल की माताजी बीमार हैं।

(ग) शायद वह कल स्कूल न जाए।

(vii) **विस्मयादिबोधक वाक्य** :- ऐसे वाक्य जिनसे हर्ष, विस्मय, शोक आदि के भाव प्रकट हो, उन्हें विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं;

जैसे -

(क) हे भगवान! ये क्या हो गया?

(ख) हाय! ये चोट कैसे लगी?

(ग) वाह! आज मौसम कितना अच्छा है।

(viii) **संकेतवाचक वाक्य** :- वे वाक्य जहाँ किसी न किसी शर्त को पूरा करने की ओर संकेत किया गया हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं;

जैसे -

(क) अगर तुम चोरी नहीं करते तो पकड़े नहीं जाते।

(ख) अच्छी तरह से पढ़ोगे तो ज़रुर पास हो जाओगे।

2. **<u>रचना के आधार पर वाक्य भेद</u>** :- रचना के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं -

(i) **सरल वाक्य** :- जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहते हैं;

जैसे -

(क) मैं कल स्कूल जाऊँगा।

(ख) कल विकास का जन्मदिन है।

(ii) **संयुक्त वाक्य** :- जिन वाक्यों में एक से अधिक वाक्य जुड़े होते हैं, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं;

जैसे -

(क) तुम घर जाओ और मैं बाज़ार जाता हूँ।

(ख) मोहन की माँ बीमार है इसलिए मैं उन्हें देखने उनके घर जा रहा हूँ।

(ii) **मिश्र वाक्य** :- संयुक्त वाक्य में प्रत्येक उपवाक्य स्वतंत्र होते हैं लेकिन मिश्र वाक्य में एक उपवाक्य तो स्वतंत्र होता है परन्तु बाकी के उपवाक्य स्वतंत्र उपवाक्य पर आश्रित होते हैं। ये आश्रित उपवाक्य को जोड़ने के लिए जोकि, क्योंकि, कि, जो जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है;

जैसे –

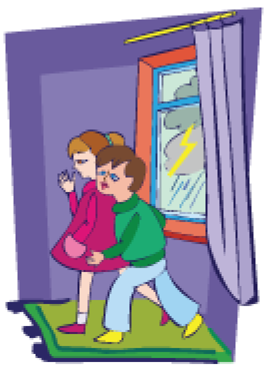

(क) मैं आज स्कूल नहीं जा सका क्योंकि बारिश हो रही थी।

(ख) अगर तुम कल स्कूल नहीं जाओगे तो मैं भी नहीं जाऊँगा।

वाक्य के रूप :- वाक्य के दो रूप होते हैं -

(क) शुद्ध

(ख) अशुद्ध

अशुद्ध वाक्य :- अकसर वाक्य रचना में, बोलचाल की भाषा में कुछ अशुद्धियाँ देखने को मिलती हैं;

जैसे -

(क) आप जाओ।

(ख) तू जल्दी स्कूल जा।

(ग) मेरे को राधा के साथ खेलना है।

शुद्ध रूप :-

(क) आप जाइए।

(ख) तुम जल्दी स्कूल जाओ।

(ग) मुझे राधा के साथ खेलना है।